महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

१०/०९/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा गुरु जी को यह सेवा समर्पण है।

सभी आत्माओं के कल्याण के लिए परिवर्तन के लिए यह सेवा शुरु हुई है। आत्माएं अपने मूल अवस्था में जागृत हो जाए। अपने मूल सत्य स्वरुप में जल्द से जल्द आ जाए। सभी आत्माओं को अपने परिवर्तन की यात्रा करनी है। परिवर्तन कैसे करेंगे? सबसे पहले आत्माओं को पता हो उन्हें क्या परिवर्तन करना है। उन्हें कहां पहुंचना है? उनको कि कौन सी स्थिति में अपने आप को पहुंचाना है? हर प्रकार से आत्माओं को स्वयं की जानकारी करनी पड़ेगी। मैं आत्मा तो हूं पर कैसी हूं? क्या मैं जो इस क्षण तन में इस क्षण जो पार्ट बजा रही हूं क्या यह पार्ट सुखकारक है दूसरों के लिए, क्या मैं आत्मा मेरे सभी गुण और शक्तियों सहित पार्ट बजाती हूं या किसी के प्रभाव में आके मेरा पार्ट बजता है। हर पल हर आत्मा को अपने हर कर्म में इसका ध्यान रखना चाहिए कि मैं जो कर रही हूं क्या यह मैं कर रही हूं, क्या यह मेरे कोई संस्कार कर रहे हैं या किसी के परवश होके मैं कर रही हूं। कौन कर रहा है? और किसको पार्ट बजाना चाहिए? मुझ आत्मा को या किसी और अस्तित्व को पार्ट बजाने देना है। हर प्रकार से हर रुप से आत्मा को अपनी रिस्पांसिबिलिटी लेनी होगी। जब आत्मा स्वयं की रिस्पांसिबिलिटी लेगी तभी सारे अस्तित्व हटते जाएंगे।

आत्मा के पास अखुट पावर है। पर वो उसे याद नहीं है। क्योंकि आत्मा बाहर खो गई है। आत्मा को सबसे पहले यह अवश्य ध्यान रखना होगा। मैं शरीर में जो पार्ट बजा रही हूं, उसका हर कर्म का हिसाब किताब मुझे ही देना होगा। मेरे हर कर्म का अच्छा फल या बुरा फल मुझे ही भुगतना होगा। अच्छा हो या बुरा हो यह भुगतने के लिए कोई और अस्तित्व नहीं आएंगे। आत्मा को अपने होश में आना होगा। आत्मा को अपना होश खोने के कारण ही वह अपने पार्ट में दुखी हो गई है। यह होश

आत्मा को खुद से लाना होगा। आत्मा का स्वभाव, संस्कार, सारे गुण आत्मा को ज्ञात है। पर आत्मा शरीर में आकर अपने कर्म बंधनों में अटक गई है। और आत्मा ने अपना मूल स्वभाव संस्कार खो दिया है। जब तक आत्मा अपनी जिम्मेवारी नहीं लेती तब तक ये कर्म बंधनों के सारे परत कभी हट नहीं सकते। ईश्वर कितनी भी मदद करने की कोशिश करें पर आत्मा को सच्चे दिल से इससे बाहर निकलने के लिए स्वयं की रिस्पांसिबिलिटी लेनी होगी। अपनी सच्चे दिल रखनी होगी। जब आत्मा को अपने सच्चे दिल से यह लगेगा कि मुझे सच में परिवर्तन होना है। मुझे मेरे मूल अवस्था में आना है। आत्मा की यात्रा अपने आप उस ओर दिशा में पहुंचना शुरु होगी। आत्मा को हर प्रकार से दिशा मिलती जाएगी। पर सबसे पहला कदम आत्माओं को रखना होगा कि मुझे मेरा परिवर्तन करना है। हर प्रकार से परिवर्तन की जिम्मेवारी आत्मा को उठानी होगी। क्योंकि जो इस कल्प में मैं रचूंगी वही मेरा अगले कल्प में फल होगा। यह आत्मा को सदा ध्यान रहे। यहां पर आत्मा जो रचना रचेगी स्वयं के प्रति वही उसके साथ अगले कल्प में होने जा रहा है। जब यह स्मृति सभी आत्माओं को सदा रहेगी। तब ही आत्माएं अपने परिवर्तन के ऊपर ध्यान दे पाएंगे। पर यह स्मृति आत्मा को स्वयं को करनी है। आत्मा कभी यह नहीं कह सकती कि मुझसे यह नहीं हो रहा है। मैं यह नहीं कर सकती। मुझसे यह नहीं सहन हो रहा है। यह बोल आत्मा के नहीं है। आत्मा की रचना बहुत दिव्य है। अति पावरफुल है। आत्मा स्वयं ही शक्तिशाली है। बस उसे अपने होश में आना होगा। उसे जागृत होना होगा।

आत्मा को जागृत कोई और नहीं कर सकता। आत्मा को स्वयं को जागृत होना होगा। स्वयं की जिम्मेवारी लेनी होगी। अब मैं यहां जो करुंगी वह मुझे भुगतना ही है। जब यह स्मृति हर आत्मा को सदा रहेगी। तभी इस स्मृति से आत्मा अपने परिवर्तन की ओर चल पड़ेगी। आत्मा को अपने परिवर्तन की दिशा मिलती जाएगी। पर जब तक पता ही नहीं है कि मैं संसार में गलत कर रही हूं। तब तक आत्मा कभी परिवर्तन की दिशा में नहीं लगेगी। सबसे पहले आत्मा को यह पता होना चाहिए कि मैं जिस शरीर में हूं, जिन शरीर के संस्कारों में मैं हूं, क्या यह सच में मेरे हैं? या मेरे

संस्कार कुछ और है? जब आत्मा स्वयं ही अपना चिंतन करेगी तभी उसके मूल संस्कार इमर्ज होना शुरू हो जाएंगे। पर यह चिंतन करने के लिए आत्माओं के पास समय होना चाहिए। अगर सच्ची दिल है तो समय भी मिलेगा। समय मिलकर रास्ता भी मिलेगा। रास्ता मिलकर ताकत भी मिलेगी। परमात्मा की मदद भी मिलेगी। पर पहला कदम आत्माओं को उठाना ही होगा। संगम युग परिवर्तन का युग है और आत्मा के परिवर्तन में सब कुछ है। उसी में उसकी खुशियां है। उसी में उसका सुख है। और यह संगम युग बहुत अनमोल है। और बहुत थोड़े समय का है। अगर इस कम समय में आत्मा जागृत हो पाएगी तो वह अपना परिवर्तन कर सकती है और अपने अगले कल्प के लिए अपनी जमा पूंजी जमा कर सकती है। अपना श्रेष्ठ पद पाने के लिए सज्ज हो सकती है। पर आत्मा को जागृत होना पड़ेगा। यह ड्रामा आत्माओं से चलता है। पर आत्मा अगर सोए हैं तो आत्माओं का ड्रामा भी नहीं चलेगा। और सारा भुगतना आत्मा को ही पड़ेगा। इसलिए आत्माओं को जागना जरूरी है। बस सबसे पहले सभी आत्माएं अपना चिंतन करें कि क्या सच में हमें परिवर्तन होना है। सभी आत्माएं अपने से विचार करें कि क्या सच में हमें संगम युग को सफल करना है परिवर्तन करके क्या सच में हमारे दिल है हमें परिवर्तन होना है सभी के लिए आज का का यह होमवर्क है सभी आत्माओं के लिए। सबसे पहले अपनी चेकिंग करना कि क्या सच में आपको परिवर्तन होना है।

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः